• काम की बात...

पूजा करते समय

पूजा कक्ष कभी भी शयन कक्ष में नहीं बनवाना चाहिए। यदि परिस्थितिवश जगह की कमी के कारण पूजाघर शयनकक्ष में बन ही जाए तो वह शयनकक्ष अविवाहितों के लिए होना चाहिए। यदि परिस्थितिवश विवाहितों को भी उसी शयनकक्ष में सोना है, तो पूजा स्थल पर सभी ओर से पर्दा डालकर रखें और रात को सोने से पूर्व पूजास्थल का पर्दा ढक दें, परन्तु यह व्यवस्था केवल स्थानाभाव के कारण ही होनी चाहिए। लेकिन यदि आपके घर में पर्याप्त जगह है, तो पूजास्थल शयनकक्ष से हटाकर ही बनवाना चाहिए।

वास्तु शास्त्र के अनुसार पूजाघर की दिशा ईशान कोण यानी पूर्वोत्तर के कोने में सबसे ज्यादा उपयुक्त मानी गई है। पूजाकक्ष को सदैव शुद्ध, स्वच्छ एवं पवित्र रखें, इसमें कोई भी अपवित्र वस्तु न रखें। पूजाकक्ष के निकट एवं भवन के ईशान कोण में झाड़ू एवं कूड़ेदान

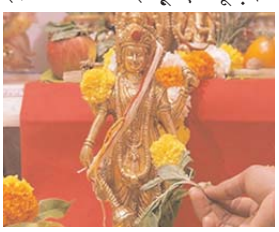

आदि नहीं रखने चाहिए। सम्भव हो तो पूजाकक्ष को साफ करने का झाड़ू-पोंछा भवन के अन्य कक्षों को साफ करने के झाड़ू-पोंछे से अलग रखें।

वास्तु और ज्योतिष, दोनों का संयुक्त रूप से निष्कर्ष है कि मनुष्य जिस दिशा में मुख करके पूजा करता है, उस दिशा से संबंधित ऊर्जा उसके जीवन को प्रभावित करती है। उत्तर दिशा को कुबेर की दिशा कहा गया है, कुबेर धन, वैभव और भौतिक समृद्धि के अधिष्ठाता हैं। जब साधक उत्तर की ओर मुख करके पूजा करता है, तो वह समृद्धि की सकारात्मक तरंगों से जुड़ता है, इससे आय, स्थिरता और संसाधनों के प्रति अनुकूलता बढ़ती है। यही कारण है कि धन-प्राप्ति की कामना रखने वालों के लिए उत्तराभिमुख पूजा का विधान बताया गया है। वहीं पूर्व दिशा सूर्य की दिशा है। सूर्य को ज्ञान, चेतना, आत्मबल और विवेक का स्रोत माना गया है। पूर्व की ओर मुख करके की गई पूजा अंतर्मन को जाग्रत करती है, बुद्धि को तेज करती है और अध्ययन, साधना व आत्मिक विकास में सहायक होती है, इसलिए ज्ञान-प्राप्ति, विद्या और आत्मबोध के लिए पूर्वाभिमुख पूजा को श्रेष्ठ माना गया है। वास्तु विशेषज्ञों के मत के अनुसार धन-प्राप्ति हेतु पूजा, पूजा कक्ष में उत्तर की ओर मुख करके करनी चाहिए एवं ज्ञान-प्राप्ति के लिए पूर्व की ओर मुख करके।

• भगवान विष्णु...

रंगभरी एकादशी

सनातन धर्म में एकादशी तिथि का विशेष महत्व माना गया है। इस तिथि पर भगवान विष्णु को समर्पित व्रत किया जाता है। साथ ही विधि-विधान से भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। हर महीने में दो बार एकादशी का व्रत रखा जाता है, जिसका अलग-अलग महत्व

शास्त्रों में बताया गया है। ऐसे ही फाल्गुन महीने की शुक्ल पक्ष की आने वाली रंगभरी एकादशी बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

रंगभरी एकादशी के दिन भगवान विष्णु के साथ ही भोलेनाथ की पूजा की जाती है। मान्यतता है कि इस दिन दोनों देवों की पूजा-अर्चना करने से मन की सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं, तो आइए जानते हैं कि इस साल रंगभरी एकादशी कब मनाई जाएगी? साथ ही जानते हैं इसकी पूजा का शुभ मुहूर्त, विधि और महत्व-

रंगभरी एकादशी कब है-फाल्गुन माह की शुक्ल पक्ष की एका (दशी तिथि की शुरुआत 27 फरवरी को मध्यरात्रि 12 बजकर 33 मिनट पर होगी। इस तिथि का समापन 27 फरवरी को रात 10 बजकर 32 मिनट पर होगा। ऐसे में उदयातिथि के अनुसार, इस साल रंगभरी एकादशी 27 फरवरी 2026 को मनाई जाएगी। रंगभरी एकादशी को आमलकी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है।

रंगभरी एकादशी 2026 पूजा शुभ मुहूर्त-रंगभरी एकादशी का पूजा मुहूर्त 27 फरवरी को सुबह 06 बजकर 48 मिनट पर शुरू होगा। ये सुबह 11 बजकर 08 मिनट तक रहेगा। इस मुहूर्त में एकादशी की पूजा की जा सकती है। वहीं इस दिन ब्रह्म मुहूर्त पूजा का समय सुबह 05 बजकर 09 मिनट पर शुरू होगा ये 05 बजकर 58 मिनट तक रहेगा। अभिजीत मुहूर्त दोपहर 12 बजकर 11 मिनट पर शुरू होगा। ये दोपहर 12 बजकर 57 मिनट तक रहेगा। रंगभरी एकादशी की पूजा के लिए ब्रह्म और अभिजीत मुहूर्त भी शुभ रहता है।

रंगभरी एकादशी पूजा विधि-रंगभरी एकादशी के दिन प्रात:काल सूर्योदय से पहले उठें। फिर स्नान-ध्यान करने के बाद स्वच्छ वस्त्र पहनें। इसक बाद इस पावन व्रत का संकल्प करें। फिर एक तांबे के लोटे में गंगाजल लेकर भगवान शिव को चढ़ाएं। फिर उनको शमी और बेलपत्र अर्पित करें। उनको अबीर-गुलाल अर्पित करें। उनके सामने धूप-दीप जलाएं। उन्हें फल-फूल और इत्र चढ़ाएं। इसके बाद देवों के देव महादेव के मंत्रों का जप रुद्राक्ष की माला से करें। आरती के साथ पूजा का समापन करें।

रंगभरी एकादशी का महत्व-धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि के दिन ही विवाह के बाद महादेव मां पार्वती के साथ पहली बार काशी आए थे। उस समय देवताओं और गणों ने उनके स्वागत में दीपक जलाए थे। आरती की थी। साथ ही फूल, गुलाल और अबीर उड़ाया था। इसके बाद से ही काशी में इस तिथि के दिन शिव जी और पार्वती जी की पूजा के साथ उनके साथ होली खेली जाने लगी और इसे रंगभरी एकदशी के रूप में मनाया जाने लगा।

बाबा काशी विश्वनाथ मंदिर से जुड़े रहस्य

काशी विश्वनाथ मंदिर न केवल एक तीर्थस्थल है, बल्कि यह सनातन धर्म की आत्मा, श्रद्धा और रहस्य का अद्वितीय संगम है। वाराणसी स्थित यह मंदिर भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है और इसे मोक्ष की नगरी का केंद्र माना जाता है। युगों-युगों से यह मंदिर भक्तों, साधुओं, ऋषियों और राजाओं की आस्था का केन्द्र रहा है। इसके साथ जुड़े कुछ ऐसे रहस्य और तथ्य हैं, जो इसे केवल मंदिर नहीं, बल्कि एक दिव्य चमत्कार का प्रतीक बनाते हैं। तो आइए जानते हैं मंदिर से जुड़े कुछ ऐसे ही अनसुने रहस्य।

● काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग का स्वरूप दो भागों में विभाजित है। दाहिनी ओर शक्ति स्वरूपा मां भगवती का वास है, जबकि बाईं ओर भगवान शिव सुंदर रूप में विराजमान हैं। यह संयोजन शिव और शक्ति की एकात्मकता को दर्शाता है, जो अत्यंत दुर्लभ और पवित्र है। इसी कारण काशी को मुक्ति क्षेत्र कहा जाता है, क्योंकि यहां शिव और शक्ति के मिलन से आत्मा को परम शांति और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

● मां भगवती के दाहिनी ओर स्थित होने से मोक्ष का मार्ग केवल काशी में खुलता है। ऐसा कहा जाता है कि यहां मृत्यु का अर्थ अंत नहीं, बल्कि मुक्ति है। भगवान शिव स्वयं मृत्यु के समय भक्त के कान में तारक मंत्र फूंकते हैं, जिससे आत्मा मुक्त हो जाती है और पुनर्जन्म के बंधन से छूट जाती है। अकाल मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति को भी यदि शिव की उपासना प्राप्त हो जाए, तो वह मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

● श्रृंगार के समय सभी मूर्तियां पश्चिम मुखी होती हैं, और यही वह क्षण होता है जब शिव और शक्ति दोनों की उपस्थिति स्पष्ट होती है। काशी विश्वनाथ ही वह अद्वितीय स्थान है जहां शिव और शक्ति एक साथ पूजित होते हैं। एक ही गर्भगृह में, एक ही ज्योतिर्लिंग में। ऐसा संगम संसार के किसी अन्य तीर्थ या मंदिर में नहीं देखने को मिलता।

● मंदिर के गर्भगृह के ऊपर स्थित शिखर श्री यंत्र से मंडित है, जो इसे तांत्रिक साधना के लिए एक अत्यंत सिद्ध स्थान बनाता है। श्री यंत्र, लक्ष्मी और शक्ति साधना का प्रतिनिधित्व करता है, और इसका शिवलिंग के ऊपर होना यह दर्शाता है कि यहां केवल भक्ति ही नहीं, अपितु तंत्र और साधना की ऊंचाई भी प्राप्त की जा सकती है। यह स्थल उन साधकों के लिए विशेष फलदायी है जो गूढ़ विद्याओं की खोज में हैं।

● बाबा विश्वनाथ के दरबार में चार प्रमुख द्वार हैं - शांति द्वार, कला द्वार, प्रतिष्ठा द्वार और निवृत्ति द्वार। ये द्वार केवल प्रवेशमार्ग नहीं, बल्कि तांत्रिक साधना और चेतना के विशेष आयाम हैं। ऐसा दुर्लभ संयोजन पूरे विश्व में कहीं और नहीं मिलता जहां शिवशक्ति की साक्षात उपस्थिति हो और साथ ही चारों तांत्रिक द्वार भी मौजूद हों।

● गर्भगृह में बाबा का ज्योतिर्लिंग ईशान कोण में स्थित है, जो दिशा शास्त्र और वास्तु के अनुसार विद्या, कला, साधना और ब्रह्मज्ञान का प्रतीक है। ईशान कोण में शिव का वास यह दर्शाता है कि यहां भगवान का नाम केवल शंकर ही नहीं, ईशान के रूप में विद्या और तंत्र का अधिपति स्वरूप भी है। इस दिशा से संपूर्ण ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्रवाहित होती है।

● मंदिर का मुख्य द्वार दक्षिण मुखी है, और बाबा का मुख उत्तर दिशा की ओर अर्थात अघोर दिशा में स्थित है। जब भक्त मंदिर में प्रवेश करता है, तो सबसे पहले उसे शिव के अघोर रूप के दर्शन होते हैं। जो समस्त पापों, तापों और बंधनों को नष्ट कर देने की शक्ति रखते हैं। इसलिए यहां प्रवेश करते ही व्यक्ति के पुराने पाप क्षय होने लगते हैं और आत्मा शुद्ध होती जाती है।

● भौगोलिक दृष्टि से काशी एक त्रिशूल रचना पर स्थित है, जिसमें ज्ञानवापी क्षेत्र त्रिशूल का मध्य बिंदु है, मैदागिन और गौदौलिया दो ओर की धाराएं हैं। कहा जाता है कि प्राचीन काल में मंदाकिनी और गोदावरी नदियां इन क्षेत्रों से बहती थीं। इस त्रिशूल रचना के कारण काशी में प्रलय भी नहीं आता, क्योंकि भगवान शिव स्वयं इसे अपने त्रिशूल पर धारण किए रहते हैं।

● बाबा विश्वनाथ काशी में गुरु और राजा दोनों स्वरूपों में विद्यमान हैं। दिन में वे गुरु रूप में काशीवासियों को दिशा देते हैं और रात्रि के समय, विशेषकर नौ बजे की श्रृंगार आरती में, वे राज वेश धारण करते हैं। इसी कारण उन्हें राजराजेश्वर कहा जाता है। यह रूप न केवल सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि यह दर्शाता है कि शिव जन-जन के राजा और संरक्षक हैं।

■ पं. नित्यानंद

काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग का स्वरूप दो भागों में विभाजित है। दाहिनी ओर शक्ति स्वरूपा मां भगवती का वास है, जबकि बाईं ओर भगवान शिव सुंदर रूप में विराजमान हैं। यह संयोजन शिव और शक्ति की एकात्मकता को दर्शाता है, जो अत्यंत दुर्लभ और पवित्र है।

इसी कारण काशी को मुक्ति क्षेत्र कहा जाता है, क्योंकि यहां शिव और शक्ति के मिलन से आत्मा को परम शांति और मोक्ष की प्राप्ति होती है...

• सीढ़ियां...

वास्तु दोष

वास्तुशास्त्र के अनुसार, घर में ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा में सीढ़ियों का होना शुभ नहीं माना जाता है। यह दिशा जल तत्व से संबंधित होती है। ऐसे में इस स्थान का वास्तु दोष कम करने के लिए आप जल से संबंधित चीजें सीढ़ियों के नीचे रख सकते हैं। इसके लिए वॉटर फाउंटेन और पौधे भी रख सकते हैं। लेकिन इसके लिए चीनी मिट्टी के गमलों का ही प्रयोग करें। मिट्टी के गमले भारी होते हैं और उसकी मिट्टी झड़ती रहती है। वास्तु के अनुसार, ईशान कोण हमेशा हल्का और साफ-सुथरा होना चाहिए। ऐसे में इस स्थान पर छोटे चीनी मिट्टी के गमले में पौधे लगाकर रखें। इसके अलावा, कांच की बोतल में पानी भरकर भी आप पौधे लगा सकते हैं। आग्नेय कोण में सीढ़ियां होना वास्तु के अनुसार सही माना जाता है। दक्षिण-पूर्व दिशा को अग्नि से संबंधित माना गया है ऐसे में इस दिशा में मौजूद सीढ़ियों के नीचे आप अग्नि तत्व से जुड़ी चीजें रख सकते हैं। यहां इवेंटर, वस्त्र प्रेस करने का स्थान, गैस सिलेंडर आदि रख सकते हैं।

• पर्स...

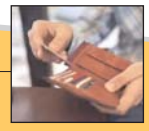

ज्यादातर लोग अपने पर्स को हमेशा फालतू चीजों से भर कर रखते हैं। वास्तु के अनुसार, पर्स में पुराने बिल, रसीद और फटे नोट जमा कर के रखने को बड़ा दोष माना गया है। वहीं, फटे हुए पर्स का इस्तेमाल करना धन हानि का कारण बनता है। ऐसे में अगर पर्स थोड़ा सा भी फट जाए तो उसे तुरंत बदल दें। वास्तु के अनुसार, पर्स का रंग भी आपकी आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है। काले, नीले या बहुत गहरे रंग का पर्स कभी-कभी धन रुकावट का कारण बन सकता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित